

अविकारी। अव्यय -

वे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, कारक और काल के अनुसार परिवर्तित नहीं होता है,

अविकारी। अव्यय शब्द कहलाते हैं -

जैसे - चेतक छोडा तेज दौड़ा है।
 रमेश अभी-अभी गया है।

बच्चा धीरे-धीरे चलता है।

बच्ची धीरे-धीरे चलती है।

बच्चे धीरे-धीरे चलते हैं।

बच्चे ने धीरे-धीरे कहा।

बच्चा धीरे-धीरे कहता है।

अविकारी / अव्यय के भेद :-

- | | |
|--------------------|----------------|
| ① → क्रिया विशेषण | } मुख्य रूप से |
| ② → सम्बन्ध बोधक | |
| ③ → समुच्चय बोधक | |
| ④ → विस्मयादि बोधक | |
| ⑤ → निपात | → गौण रूप से |

① क्रिया विशेषण-

वे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया के पूर्व प्रयुक्त होकर विशेषण का बोध कराते हैं, क्रियाविशेषण कहलाते हैं-

जैसे- मैं अभी-अभी आया हूँ। वह बहुत पहले ही चला गया।
बच्चा बाहर खेल रहा है। सीमा बहुत खाली है।

क्रिया विशेषण के चार उपभेद होते हैं-

- (i) → कामवाचक क्रिया विशेषण
- (ii) → स्थानवाचक " "
- (iii) → परिमाणवाचक " "
- (iv) → रीतिवाचक " "

(i) कालवाचक क्रिया विशेषण-

वे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया के पूर्व प्रयुक्त होकर क्रिया के घटित होने के समय का बोध कराते हैं, कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं-

जैसे- कविता अभी-अभी आई है। बच्चे आज आरेंगे।
रवि कल चला गया। हम पहले आरेंगे।

वह कई दिनों से घूम रहा है। मैं आज आया हूँ।

रेखा पहले जा चुकी थी। वह बार-बार बोलता है।

वह कई-बार चला गया। हम आज घूमने जायेंगे।

विशेष - कालवाचक क्रियाविशेषण की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से 'कब' के द्वारा प्रश्न किया जाता है।

(ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण-

वे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया के पूर्व प्रयुक्त होकर उसके घटित होने के स्थान का बोध कराते हैं, स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं-

जैसे- लोमी कुत्ता बाहर घूम रहा है।
 लीमा बिल्ली अंदर बैठी है।

छोटा बच्चा ऊपर खेल रहा है।

राजेश सामने बैठा है।

आप यहाँ बैठो। तुम इधर आओ।

विशेष- स्थानवाचक क्रियाविशेषण की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से 'कहाँ' के द्वारा प्रश्न किया जाता है।